तभी से चुप हैं पिताजी

रामजी यादव

तभी से चुप हैं पिताजी

पिताजी की चुप्पी इतनी पुरानी हो रही है कि दिन अंगुलियों पर नहीं गिने जा सकते। बाकायदा किसी ईस्वी सन् के किसी महीने की कोई तारीख है जो अब मुझे याद नहीं है। तभी से वह इस तरह खामोश हैं कि लगता है गूंगे हो गए हैं। हम लोगों का यह विश्वास इतना दृढ़ हो गया है कि हम अब इशारे से बात करने लगे हैं। गूंगे हैं तो जरूर बहरे भी होंगे। तब से अब तक कई ऐसे मौके आए जब वह गुस्से से अंगारा हो सकते थे लेकिन वह इत्मीनान से बैठे कोई लकड़ी या सींक तोड़कर उसकी कई बार नाप जोख करते रहते।

हमें लेकर पिताजी का कोई बहुत बड़ा सपना नहीं था, क्योंकि पिताजी खुद इतने बड़े

नहीं थे, जितने बड़े सपने होते हैं। हमें सरकारी स्कूल में डालते वक्त वह सोचते रहे होंगे कि कोई छोटी-मोटी नौकरी मिल गई तो हमारा जीवन बन जाएगा वरना खेतों और गाय-भैंसों के श्रमिक-पुत्रों के सहारे जीवन की बैलगाड़ी हांक लिया करेंगे। कभी अनुमान नहीं हो पाया कि वह हमें कितना प्यार करते थे — कभी-कभी अपनी थाली की दाल से जरा-सा घी निकाल करके हमारे कटोरे में डाल देते थे। जाड़े में जब नहलाने लगते तो हम पानी से डरते और भागने की फिराक में रहते तो वे हमारी नंगी पीठ पर हथेली पटकते हुये कहते —'ससुरा घड़रोज। आदमी का जरा सा लेखा ही नहीं है। कान पर एक पसेरी मैल जम रही है और पानी काट रहा है।' हमारे सिर पर तेल धरते तो भी थपड़ियाते हुये और कंघी करने की बजाय बाल कटवा लेने की हिदायत देते —'बाल इतने बढ़े हैं, क्या नाच मंडली में जाने का इरादा है जनखो ! बाल उतरवाओ।'

लेकिन एक व्यवहार ऐसा होता कि लग जाता हमारे माता-पिता हमें बेहद प्यार करते हैं। वे अनुशासन के बड़े प्रेमी थे। हमारे लिए उनका अनुशासन इतना महंगा पड़ता कि हम किसी कीमत उसे लेने से बचते थे और वे मानते थे कि हमारा यह बचाव हमारी ज़िंदगी तबाह कर देगा। पिताजी एक आवाज देते और हमलोग न सुनते तो वे लगातार तीन आवाजें देते जिसका सीधा अर्थ होता कि पिताजी पर गुस्सा सवार हो रहा है। इस आभास मात्र से हमारे छक्के छूटने लगते। हिम्मत जुटाना कठिन होता था। न जाने का फल भोगना कठिन और न जाने का प्रसाद पचाना और भी कठिन। लेकिन इतने नाकारे भी हम न थे कि न जाते। जाते ही पिताजी तमाचे से शुरू होकर लात-घूंसों तक की यात्रा कर डालते। माँ पहले पिताजी को रोकने का प्रयास करती फिर हमें चुप कराती। माँ के इस प्यार से हम और ज्यादा रोते। इतना रोते कि माँ ऊब जाती और उसके हाथ में कलछुल, पलटा या बेलन जो कुछ भी होता उसी का उपयोग करके अपनी ऊब से बचने का प्रयास करती।

माँ का दर्शन था कि बच्चों को 'हीत' (अतिथि) की तरह खिलाना चाहिए और मुद्दई की तरह रखना चाहिए। पता नहीं पिताजी इस दर्शन से कितना इत्तफाक रखते थे लेकिन माँ की शिकायत पर हमारी खातिरदारी अच्छी तरह करते।

मैंने जल्दी ही अपना रास्ता चुन लिया। मैं नाटक करना चाहता था। सबसे पहले मैंने रामलीला में बन्दर बनने का काम किया और हनुमान के साथ समुद्र तक गया।

जब हनुमान जी समुद्र डांक गए तो बन्दर किनारे बैठे रहे। हनुमान जी को समुद्र के पार रावण का बगीचा उजाड़ना था। बगीचे में राक्षस रखवाली करते थे। रावण के पास राक्षस कम थे, इसलिए व्यास जी ने हमारा निर्यात कर दिया। हम सारे बन्दर राक्षस बना दिए गए। इस पार जो हनुमान जी हम बंदरों के नेता थे, वे ही उस पार हमारे शत्रु हो गए। उन्होंने हम राक्षसों पर अपनी मुष्टिका से प्रहार किया।

बाद में मैं अंगद बना और अंतिम दिन भरत।

पिताजी ने मेरा समुचित इलाज किया लेकिन मैं अपनी प्रगति से खुश था। मेरी यात्रा जारी रही।

मेरी एकमात्र बहन ने ऐलान किया कि वह पांचवीं के बाद भी पढाई जारी रखेगी। वह पढने में मुझसे तेज थी। कक्षा में सारी लड़कियों की नेता थी। उसने फ्रॉक पहनने की बजाय बुश्शर्ट का चुनाव किया। बुश्शर्ट सिलवाने की उसकी जिद पर माँ ने उसे पहले समझाया। ऊँच-नीच का वास्ता दिया लेकिन वह अड़ी रही। फिर माँ ने उसकी मरम्मत की। माँ थक गई लेकिन बहन ने फ्रॉक पहनना कबूल न किया।

उसकी पेशी पिताजी के दरबार में हुई। पिताजी ने उसे घूरा। वह मानते थे कि बच्चे घूरने से न डरें तो उन पर मार-पीट का असर नहीं पड़ता। जब वह नहीं डरी तो पिताजी ने वात्सल्य उड़ेलते हुए समझाया कि लड़कियों को बुश्शर्ट नहीं पहनना चाहिए। लेकिन उसने कहा कि जब भैया पहनेगा तो मैं भी पहनूंगी। पिताजी ने कहा कि भैया लड़का है। बहन चट से बोल पड़ी — तो क्या हुआ? दो कान भैया के दो कान मेरे। दो आँख भैया के दो आँख मेरी। एक मुंह भैया के एक मुंह मेरा। इससे आगे पिताजी कुछ सुनना नहीं चाहते थे। उनके पास कोई उत्तर नहीं था।

पढ़ाई के बारे में तय हुआ कि उसे आठवीं तक पढ़ने दिया जाए क्योंकि आठवीं तक ऊँच-नीच होने की संभावना कम से कम रहती है। लिहाज़ा वह स्कूल जाने लगी।

जूनियर हाईस्कूल में मेरी बहन ने बालचर (स्काउट्स और गाइड्स) की गतिविधियों में हिस्सा लेना शुरू किया। उसने कई इनाम जीते और अपनी